

Question - भारतीय दर्शन की सामान्य विशेषताएँ क्या हैं ?

Answer - भारतीय दर्शन के विभिन्न विचारक विचार-धाराओं के समर्पक हैं। इसमें बुद्ध आस्तिक हैं तो बुद्ध नास्तिक। फिर भी बुद्ध ही सामान्य जाति अंग्रेज हैं जिनपर सभी भारतीय प्रभाव एक मत हैं। इन्हीं सामान्य जातियों को भारतीय दर्शन की प्रमुख विशेषताओं की संज्ञा दी जाती है। ये प्रमुख विशेषताएँ निम्नीलिखित हैं।

① जीवन के प्रति एक नीश्चत दृष्टिकोण: — पाश्चात्

विचारकों के लिए दर्शन एक मानसिक व्यायाम है। मात्र है। यहाँ दर्शन की उत्पत्ति मानवीजवासा की शान्ति के लिए होती है। किन्तु भारतीय दर्शन के केवल मानसिक कसरत नहीं कहा जा सकता। इसका व्यवहारिक पक्ष इसके ऐंगतिक पक्ष से अधिक महत्वपूर्ण सकल है। यह जीवन के उत्थान-वर्द्धक है। पुष्टि को संतुष्ट करना ही-इसका लक्ष्य नहीं है। ठीक ज्ञान के प्रकाश में जीवन को सुव्यवस्थित बनाना इसका मुख्य उद्देश्य है। जीवन की समस्याओं का समाधान दुँना भारतीय विचारक अपना पवित्र कर्तव्य मानते हैं। जगत् सृष्टा कृष्ण और मूड (MOOD) और भी इस मत का समर्थन करते हैं।

" In Indian philosophy is for life. It is to be live. It is not to enought to know the truth The truth must be lived. The goal of Indian philosophy is not to be know the ultimate truth but to realize it, to become one with it."

इस प्रकार भारतीय दर्शन का दृष्टिकोण व्यवहारिक है।

② भारतीय दर्शन की उत्पत्ति आध्यात्मिक असंतोष के चलते होती है।

विश्व में दुःख एवं कुराई का प्रकोप देखकर भारतीय विचारक एक प्रकार का आध्यात्मिक असंतोष अनुभव करते हैं। तथा फलस्वरूप उनका दार्शनिक चिंतन आरम्भ होता है। भारतीय विचारकों का प्रधान लक्ष्य मानव को दुःखों से मुक्त करना है। महात्मा बुद्ध ने अपने दर्शन में दुःख का विषय वर्णन किया है। इनके चार आर्थ सत्य के दुःख के विचार पर ही आधारित हैं -

(क) दुःख है (ख) दुःख का कारण है (ग) दुःखी निरोध सम्भव है तथा (घ) दुःख निरोध का मार्ग है। इसी प्रकार अन्य भारतीय दर्शन भी दुःख के भावों से प्रेरित हैं।

बुद्ध भारतीय आलोचक भारतीय दर्शन में दुःखों का विषय वर्णन पाकर इसे निराशावादी कह बैठते हैं परन्तु यह आक्षेप गलत है। भारतीय दर्शन का अर्थ आरम्भ मले ही निराशावाद से होता है किन्तु इसका अंत आशावाद में होता है। भारतीय विचारक केवल दुःखों का अस्तित्व स्वीकार कर विषद्विष नहीं बन जाते। वे दुःखों के विनाश के लिए उचित मार्ग बताते हैं।

३ विश्व को एक नैतिक रंगमंच मानना : - प्रायः सभी विचारक भारतीय विचारक विश्व को एक नैतिक रंगमंच मानते हैं। मनुष्य अपने विगत कर्म के अनुसार ईश्वर या प्रकृत की ओर से शरीर इन्द्रिय एवं वातावरण प्राप्त करके विश्वरूपी रंगमंच पर उपस्थित होता है। जिस प्रकार किसी रंगमंच पर पात्र विभिन्न कथों में सज्जज कर अपना पाठ उदा करत हैं तथा उसके बाद रंगमंच से अलग हो जाते हैं। ठीक उसी प्रकार विश्वरूपी रंगमंच पर भी विभिन्न प्राणी अपने कर्मों का कमाल दिखाकर विश्वरूपी मंच से विदा हो जाते हैं। प्राणियों को अच्छे कर्मों द्वारा सफल अभिनेता

बनने का प्रयास करना चाहिए। जिस प्रकार साधारण संगमंच पर पुराने पात्र स्थान रिक्त करे जाते हैं तथा नये पात्र उनके स्थान पर आते रहते हैं उसी प्रकार विश्व भी एक ऐसा मंच है जहाँ पुराने और नये चेहरे होना जाते आते रहते हैं।

(4) विश्व की शाश्वत नैतिक व्यवस्था में विश्वास : - विश्व में एक शाश्वत नैतिक व्यवस्था का समर्पण प्रायः सभी भारतीय विचारक करते हैं। विश्व में जो भी कर्म हम करते हैं उसका फल निश्चित रूप से हमें मिलता है। अरु कर्मों के लिए पुरस्कार तथा बुरे कर्मों के लिए दंड का मागी होना पड़ता है। यही कर्म सिंहात है। इस सिंहात के अनुसार हमारा वर्तमान जीवन हमारे विगत जीवन का फल है तथा भावी जीवन की आधारशिला हमारे वर्तमान जीवन के कर्मों पर आधारित है। न्याय का भाग्यनिर्माण स्वयं उसके हाथ में है।

न्याय कर्मन के अनुसार कर्म सिंहात का नियंत्रण ईश्वर द्वारा होता है। ईश्वर ही न्याय के उसके कर्मोंनुसार सुख या दुःख प्रदान करता है। जैन, बौद्ध, ब्राह्मण, भिमांसा आदि कर्मन कर्म सिंहात को ईश्वर के नियंत्रण से स्वतन्त्र मानते हैं। फिर भी कर्म सिंहात का समर्पण सम्पूर्ण भारतीय दर्शन की ओर से किया गया है।

(5) आत्मा के अस्तित्व में विश्वास : - चारवाक तथा बौद्ध को छोड़कर सम्पूर्ण भारतीय दर्शन आत्मा की शक्ति में अटूट विश्वास रखता है। यहाँ आत्मा को शरीर से भिन्न एक आध्यात्मिक सत्ता कहा गया है। यह नित्य एवं अविनाशी है। भारतीय विचारक तत्त्वज्ञान के लिए आत्मज्ञान में लिए आवश्यक वतलते हैं। डॉक्टर ने तो आत्मज्ञान को ही एक नित्य, अविनाशी आध्यात्मिक सत्ता

के रूप में स्वीकार करता है। उपनिषदों एवं वेदों में भी आत्मा के महत्व पर विशेष बल दिया है।

आत्मा के स्वरूप को लेकर भारतीय दर्शन में कई विचार धाराओं का जन्म हुआ है। चारवाक के अनुसार चैतन्य शरीर की आत्मा है वहीं के अनुसार आत्मा चैतना का प्रवाह है। जैन दर्शन के अनुसार आत्मा जीव या चैतन्य युक्त है। इसमें चार प्रकार पूर्णता पायी जाती है। न्याय वैशेषिक के अनुसार चैतना आत्मा का स्वाभाविक गुण न होकर आकाशिक गुण है। जिमाशा दर्शन के अनुसार भी चैतना आत्मा का आकाशिक गुण है। इसके विपरीत शारदा दर्शन आत्मा को चैतन्य स्वरूप मानता है।

६ अज्ञान दुःख एवं बन्धन को उत्पन्न करता है तथा अज्ञान से मोक्ष मिलता है। — भारतीय दर्शन में अज्ञान को बन्धन तथा दुःख का कारण बताया गया है। जन्ममरण एवं पुनर्जन्म के चक्कर में पड़कर दुःख भोगना ही बन्धन है जन्म-पुनर्जन्म के जाल से मुक्त हो जाना ही मोक्ष कहलाता है। प्रायः सभी भारतीय विचारक अज्ञान को ही दुःखों की जन्मी मानते हैं। ७ भगवान् बुद्ध ने अज्ञान को दुःखों का मूल कारण बताया है। इंकार के अनुसार भी व्यक्ति अज्ञानवश आत्मा तथा ईश्वर में द्वैध मानकर बन्धनग्रस्त होता है। इन सभी विचारकों ने बन्धन एवं दुःख दूर करने का प्रमुख साधन ज्ञान को बताया है। तत्त्वज्ञान व्यक्ति को बन्धन एवं दुःख से मुक्ति दिलाने में मोक्ष की प्राप्ति कराता है।

७) आत्म नियंत्रण पर जोर। मोक्ष की प्राप्ति के लिए वे प्रत्येक से दूर विचारों को निष्कासित करके उत्तम विचारों को प्रतिष्ठित करना एवं आत्म समन-संयम रखना भी अनिवार्य माने जाते हैं।

इसके लिए प्रायः सभी भारतीय दर्शनों में योग की महत्त्व  
स्वीकार की गयी है। इन्द्रियों पर नियंत्रण रखकर  
ही हम वासनाओं, हव्णाओं राजद्वेष एवं अन्य दुर्घ  
प्रवृत्तियों को अपने वश में रख सकते हैं।  
चारवाक के अतिरिक्त अन्य सभी भारतीय विचारकों  
ने आत्मनियंत्रण को अत्यधिक महत्वपूर्ण बताया है।

आत्मसंयम पर अत्यधिक जोड़ देने के कारण  
पुद्गल अलिप्तक भारतीय दर्शन पर सन्यास का  
आक्षेप लाते हैं। किन्तु यह आक्षेप निराधार है  
आत्मा को सबसे अधिक महत्वपूर्ण मानते हुए  
भी भारतीय विचारक शरीर, मन प्राण आदि  
के समुचित विकास पर भी पूर्ण ध्यान देते हैं।

(8) जीवन का चरम लक्ष्य मोक्ष प्राप्ति है। — चारवाक के  
अतिरिक्त सम्पूर्ण भारतीय दर्शन मोक्ष को ही जीवन का चरम  
लक्ष्य मानता है। दुःख रहित अवस्था को ही मोक्ष  
कहते हैं। कुछ अन्य विचारकों ने इसे आनन्दमय  
अवस्था बताया है। इस प्रकार मोक्ष के दो पक्ष हैं  
निष्पेक्षात्मक तथा भावात्मक। निष्पेक्षात्मक रूप से  
मोक्ष दुःख रहित अवस्था है तथा भावात्मक रूप  
से यह आनन्दमय अवस्था है। मोक्ष दो प्रकार के  
होते हैं ① जीवनमुक्ति तथा विदेह मुक्ति।  
शरीर धारण करते हुए इसी जीवन में मुक्त हो जाना  
ही जीवन मुक्ति है। मृतके बाद शरीर छोड़कर  
मुक्ति पाना ही विदेह मुक्ति है। मोक्ष की निर्वर्ण  
कवच्य आदि विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।  
भारतीय दर्शन शान को मोक्ष का एक साधन मानता है।  
मोक्ष सर्वोच्च साध्य। यह किसी अन्य साध्य  
का साधन नहीं हो सकता।